

## विषयानुक्रम

प्रकाशकीय निवेदन	: ६	चिन्ता, अभिनिबोध	: १०
संक्षेपमें: श्रीसुशील	: ८	श्रुतज्ञान	: १२
दो शब्द: श्रीगोपी-		लब्धि, भावना,	
नायजी युग	: १२	उपयोग, नय	: १३
निर्दर्शन श्री. प.		नैगम, समग्र, व्यवहार,	
सुखलालजी	: १३	ऋजुसूत्र	: १४
१ भारतीय दर्शनमें जैन		शब्द, समभिष्ट, एवंभूत	: १५
दर्शनका स्थान	: ३	स्याद्वाद	: १६
२ जैन दृष्टिसे ईश्वर	: २७	द्रव्य	: १८
३ जैन दर्शनमें कर्मवाद	: ६१	द्रव्य, गुण, पर्याय	: १९
४ जैन विज्ञान	: ७७	अवधि, मन-पर्यव,	
विज्ञान-जड़ विज्ञान,		केवलज्ञान	: १००
पुत्रल	: ६०	जीव, अजीव, आश्रव	: १०१
धर्म, अघर्म	: ८१	बध, सवर, निर्जरा	: १०२
आकाश, काल	: ८२	मोक्ष, मोक्षमार्ग,	
जीव	: ८३	सम्यग्दर्शन, सम्यग्ज्ञान	: १०३
प्राणविद्या, आत्मविद्या,		सम्यक् चारित्र,	
चेतना	: ८४	उपसहार	: १०४
उपयोग, दर्शन	: ८५	५ जीव	: १०६
ज्ञान, मति, (शुद्ध)		६ जीव-२	: १३०
मति	: ८६	एक प्रकारके जीव	: १३१
अवग्रह, ईहा	: ८७	दो प्रकारके जीव	: १३४
अवाय, धारणा, स्मृति	: ८८	तीन प्रकारके जीव	: १३७
संज्ञा	: ८९	चार प्रकारके जीव	: १३८

७ भगवान् पार्श्वनाथ	: १५५	कर्मकी स्थिति	: २३०
१ महाभेषवाहन महाराजा		कर्मका अनुभाग	: २३२
स्वारवेल	: १८३	कर्मका प्रदेशबन्ध	: २३३
१ स्वारवेलके शिलालेखका		कर्मके आश्रव-कारण	: २३३
भाषानुवाद (श्री. प.		कर्मका विपाक	: २३९
सुखलालजी कृत)	: २०४	११ जैन दर्शनमें धर्म और	
१० जैनोंका कर्मवाद (२)	: २१०	अधर्मतत्त्व	: २४४
कर्मकी प्रकृति	: २११	धर्म	: २४४
		अधर्म	: २५४

### श्रीचारित्र स्मारक ग्रन्थमालाके कुछ उपयोगी ग्रन्थ

श्वेताम्बर-दिगम्बर-दोनों फिरकोंका सतैक्य दरसाते  
शास्त्रपाठोंका संग्रह व उनका प्रमाणमूल अवलोकन।  
मूल्य-देढ रुपया।

धर्मविन्दु-धर्मके मूल विचारोंका स्पष्टीकरण करनेवाला  
सूत्रात्मक ग्रन्थ व उसका विवेचन। मूल्य-चार रुपया।

जैन परंपरानो इतिहास-भ. महावीरस्वामीसे वि. सं.  
१००० तकका जैन श्रमण-परंपरा, राजा-महाराजा, मंत्री-  
महामंत्री, श्रावक-श्राविका, गण-गच्छ, तीर्थ-महातीर्थ, शास्त्र-  
साहित्य आदिका शृंगलावद्ध इतिहास। (छप रहा है)

### श्रीचारित्र स्मारक ग्रन्थमाला

ठि श्री. चन्दुलाल लखुमाई परीख

माडवीकी पोलमें नाजीगभूषरकी पोल, अहमदाबाद (गुजरात)